हवनीय द्रव्य (शाकल्य) विमर्श

शाकल्य की परिभाषा

तिल अक्षत यव शर्करा और घृत के प्रमाणानुसार मिश्रण को शाकल्य कहते हैं-

तिलाक्षतयवाश्चापि शर्कराऽऽज्यं तथैव च।

एतच्छाकल्यमित्याहुः पूर्वाचार्या महर्षयः॥

व्रीहीन् यवान्वा हविषि' (कात्या० श्री० सू० १।६।१) तथा 'होमं समारभेत् सपिर्यवव्रीहितिलादिना (अनुष्ठानप्रकाश) इत्यादि श्रुति-स्मृति-प्रमाणोंसे तिल, यव, चावल और घृतकी ही हविर्द्रव्य संज्ञा सिद्ध होती है। हवनादि में विशेषतया उपर्युक्त हविर्द्रव्यका ही अधिक उपयोग होता है।

हवनार्थ हवनीय द्रव्यकी आहुति देनेके विषय में शास्त्रज्ञोंने एक नियमित व्यवस्था कर दी है। अतः याज्ञिकोंको उचित

है कि जिस द्रव्यके विषयमें जो परिमाण बतलाया गया है तदनुकूल द्रव्य-योजना कर हविर्द्रव्यका व्यवहार करना चाहिये । शास्त्रानुमोदित मार्गके अनुकूल कार्य करनेसे ही उचित फल प्राप्त होता है, अन्यथा अनेक प्रकारकी हानि भोगनी पड़ती है। हविर्द्रव्यके परिमाणका विवरण शास्त्रोंमें इस प्रकार मिलता है-

तिलार्ध तण्डुला देयास्तण्डुलाध यवास्तथा।

यवार्ध शर्कराः प्रोक्ताः सर्वार्द्ध च घृतं स्मृतम् ।।

(आनन्दरामायण)

अर्थात् 'तिलका आधा चावल और चावलका आधा जो देना चाहिये। जौसे आधा शर्करा कही गई है और सबसे आधा घृत कहा गया है।

पुनः एक मत से 'तिलके आधे चावल कहे गये हैं, चावलोंके आधे जौ और चावलोंसे तिगुना घृत कहा गया है। शर्करा जितनी इच्छा हो उतनी कही गई है-

तिलार्धं तण्डुलाः प्रोक्तास्तण्डुलार्धं यवास्तथा।

तण्डुलैत्रिगुणं चाज्यं यथेष्टं शर्करा मता ॥

'यवकी अपेक्षा तिलको द्विगुणित रखना चाहिये और अन्य सुगन्धित गुग्गुल इत्यादि द्रव्योंको यवके बराबर ही रखना चाहिये '-

तिलास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चैव सर्वदा ।

अन्ये सौगन्धिकाः स्निग्धा गुग्गुलादि यवः समाः।

अथवा 'तिल का आधा यव, यवका आधा चावल, चावलकी आधी चीनी और चतुर्गुण घृतसे शाकल्यका निर्माण उत्तम कहा गया है'-

तिलार्ध तु यवाः प्रोक्ता यवार्धं तण्डुलाः स्मृताः।

तण्डुलार्ध शर्कराः प्रोक्ता आज्यभागचतुष्टयम् ।।

'तिलकी अधिकतासे लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है और यवकी अधिकतासे दरिद्रताकी प्राप्ति होती है। घृतके आधिक्यसे मुक्ति और शर्कराके आधिक्यसे सर्वसिद्धि होती है'-

तिलाधिक्ये भवल्लक्ष्मीर्यवाधिक्ये दरिद्रता।

घृताधिक्ये भवेन्मुक्तिः सर्वसिद्धिस्तु शर्करा ॥

आदि शङ्कर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

'तिलसे यवके अधिक होने पर आयुका नाश होता है, तिलके बराबर यवके रहने पर धनका नाश होता है, अतः सर्वदा तिलकी अधिकता ही उचित है । इससे सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धि होती है'-

आयुःक्षयं यवाधिक्यं यवसाम्यं धनक्षयम् ।

सर्वकामसमृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि ॥

(त्रिकारिकायाम्)

'यवाधिक्ये प्रजानाशः' यह भी किसी आचार्यका मत है। 'घृतसे सने काले तिल, कुछ यवोंसे युक्त हवनीय कहे गये हैं-'

'तिलाः कृष्णा घृताभ्यक्ताः किञ्चिद्यवसमन्विताः'- (शान्तिरत्न)

'अक्षत (चावल) अथवा तिल या जौ अथवा समिधों का उन सबको घी में डुबो कर 'नमः शम्भवाय' इस मन्त्रसे आहुति देनी चाहिये-

अक्षतावा तिलान्वापि यवान्वा समिधोऽपि वा।

शम्भवायेति जुहुयात्सर्वास्तानाज्यसिक्तकान् ॥

(बृहत्पाराशरः)

'इस प्रकार उपर्युक्त मत-मतान्तरोंकी आलोचनासे 'बहुवचनं प्रमाणम्' (अनेक वचन जिस विषयको कहें वही प्रमाणभूत है इस न्यायसे यही निष्कर्ष निकलता है कि तिलकी अधिकतासे ही यजमानकी सर्वविध सिद्धियाँ होती हैं ।

कहीं-कहीं ग्रन्थ-विशेषमें '**यवार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धे तथा तिला:**' यह वचन भी मिलता है । यद्यपि यह वचन यवाधिक्य का ही विधान सिद्ध करता है, किन्तु सहायक प्रामाणिक वचनान्तरोंकी न्यूनताके कारण यवाधिक्य सर्वथा उपेक्षणीय और त्याज्य है।

हवनीय द्रव्यका एकादश विभाग आवश्यक-

पाँच हिस्सा तिल, तीन हिस्सा चावल, दो हिस्सा जौ और एक हिस्से में गुग्गुल इत्यादि सुगन्धित द्रव्य-इस प्रकार

एकादश भागोंसे संयुक्त हवनसामग्रीसे जो हवन किया जाता है, वह सर्वप्रकारको उत्तम सिद्धिको देता है'-

पञ्चभागास्तिलाः प्रोक्तास्त्रिभागास्तण्डुलास्तथा ।

द्वौ भागौ च यवस्योक्तौ भागैकं गुग्गुलादिकम् ॥

रुद्रभागैः कृते होमे जायते सिद्धिरुत्तमा ।

नित्य हवन में विहित द्रव्यके अभाव में प्रतिनिधि द्रव्य नित्य हवन में विहित द्रव्य के अभावमें प्रतिनिधि द्रव्यसे भी कार्य हो सकता है । महर्षि कात्यायन कहते हैं--

नित्ये सामान्यतः प्रतिनिधिः स्यात् ।' (का० श्रौ० सू० १।४।२)

'हवनके लिये सबसे अच्छा गोघृत होता है, उसके अभाव में बकरीका घृत, उसके अभाव में शुद्ध तेलसे हवन करना चाहिये । तेलके अभावमें जर्तिल का तेल प्रयोग करना चाहिए। जर्तिल जंगल में उत्पन्न होनेवाले तिल को कहते हैं

आज्यहोमेषु सर्वेषु गव्यमेव भवेद् घृतम् ।

तदलाभे तु माहिष्यं आजमाविकमेव वा ।

जर्तिलास्तु तिलाः प्रोक्ता कृष्णवर्णा वनोद्भवाः ।

जर्तिलाश्चैव ते ज्ञेया अकृष्टोत्पादिताच ये॥

(सत्यव्रतः)

'जर्तिलः कथ्यते सद्भिररण्यप्रभवस्तिला।'

आरण्यकास्तिलास्तत्प्रभवं तिलम्

पुनः जर्तिलके अभावमें तीसीका तेल, उसके अभावमें कुसुम्भ, उसके अभावमें पीली सरसों, उसके अभावमें सरसोंका तेल, उसके अभाव में गोंद ग्राह्य है। इनमें जो-जो वस्तु पहले वाली न मिले, उसके स्थानमें उसके आगेकी लिखी हुई वस्तुसे काम चलावे । वृक्षोंके तेल भी उपलब्ध न हो तो जौ, धान तथा समा आदि की भूसीसे होने वाले तेलको भी हवनमें प्रयुक्त कर सकते हैं।-'

घृतार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभावे तु मादिषम् ।

आज वा तदभावे तु साक्षातैलमपीष्यते ॥

तैलाभावे ग्रहीतव्यं तैलंजरर्तिलसम्भवम् ।

तदभावेऽतसीस्नेहः कौसुम्भः सर्षपोद्भवः ॥(बौधायनः)
वृक्षस्नेहोऽथवा ग्राहयः पूर्वालाभे परः परः ।
तभावे यवव्रीहिश्यामाकान्यतमो वः ॥ (मण्डनः)

'समस्त प्रकारके घृतके हवन में गौका घृत ही उचित है । गौके घृतके अभाव में भैसका अथवा बकरी एवं भेंडका घृत, उसके अभावमें तेल, उसके अभावमें जंगल में होनेवाले तिलका तेल, उसके अभावमे कुसुम्भ और उसके अभावमें सरसोंका ग्रहण उचित है।'

तदभावे तु तैलं स्यात्तदभावे तु जातिलम् ।
तदभावे तु कौसुम्भं तदभावे तु सार्षपम् ।।
गव्याज्याभावतश्छागामहिष्यादेघृत क्रमात् ।
तदभावे गवादीनां क्रमात् क्षीरं विधीयते ॥
तदभावे दधि दधि ग्राह्यं अलाभे तैलमपीष्यते ।

'यदि गौके घतका अभाव हो तो त्रमसे बकरी या भैंस आदिका घृत विहित है । यदि उसका भी अभाव हो तो

उसके बदले क्रमसे गौ आदिका दुग्ध कहा गया है। यदि दही भी न मिले तो तेल भी लिया जा सकता है।

दधिके अभावमें दुग्धसे, शहदके अभाव में गुड़से, घृतके अभावमें दुग्ध अथवा दधिसे काम चलावे'-

दध्यलाभे पयो ग्राह्य मध्वलाभे तथा गुडः

घृतप्रतिनिधि कुर्यात् पयो वा दधि वा नृप ।

(विष्णुधर्मोत्तरपुराण)

आज्य शब्दका अर्थ

(आ+अञ्ज्+क्यप्+अम् = आज्यम्) आज्यम्= पिघलाया हुआ घी।

(यज्ञपार्श्वपरिशिष्ट)

'घृत हो अथवा तेल हो, दूध हो या दही हो अथवा यावक (आधे भुने या पके हुए जौ आदि) हो संस्कार-सम्बन्ध होनेसे इन सबको आज्य शब्दसे कहा जाता है'-

घृतं वा यदि वा तैलं पयो दधि च यावकम् ।
संस्कारयोगादेतेषु आज्यशब्दोऽभिधीयते ॥

जमे हुएको घी और पिघले हुएको आज्य कहते हैं-

सर्पिर्विलीनमाज्यं स्याद् घनीभूतं घृतं भवेत्।

घृत, तिलका तेल, दूध, दही, तथा अन्य विहित धान्योंके तेलको, जब हवनके लिए अग्निपर संस्कृतकर दिया जाता है, तो इन सभीको आज्य कहा जाता है-

घृतं वा यदि वा तैलं पयो दधि च यावकम्।
सँस्कारयोगादेतेष्वाज्यशब्दो विधीयते।।

(यज्ञपार्श्वपरिशिष्टे)

हवनके लिए सर्वोत्तम आज्य गोघृत है, यदि गोघृत प्राप्त

नहीं हो सके तो अन्य विकल्प देखिए-

घृतार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभावे माहिषम्।
आजं वा तदभावे तु, साक्षात्तैलमपीष्यते।।
तैलाभावे ग्रहीतव्यं तैलं जर्तिलसम्भवम्।
तदभावेऽतसीस्नेहः कौसुम्भः सर्षपोद्भवः।।
वृक्षस्नेहोऽथवा ग्राह्यः पूर्वालाभे परः परः।
तदभावे यवव्रीहिश्यामाकान्यतमोद्भवः।।

(संस्कारदीपके)

परंतु पूर्व पूर्व के न मिलने पर ही पर वाला विकल्प ग्राह्य होता है।

उपर्युक्त सभी घृत व तेल हवनके लिए जब अग्नि पर संस्कृत कर दिए जाते हैं तो उन सभी का नाम आज्य हो जाता है।

घृतके उत्तम, मध्यम और अधमका निर्देश

'गोघृत सर्वोत्तम, भैसका घृत मध्यम और बकरीका घृत अधम कहा गया है , अतः इनमें गोघृत ही प्रशस्त है।'

उत्तम गोघृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषीभवम् ।
अधर्म छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते ॥

(पिङ्गलामत)

घृताभाव में तिल ग्राह्य

'जहाँ-जहाँ घृतके अभावके कारण द्विज अपनी आत्मामें संकीर्णता (संकोच) का अनुभव करे, वहाँ-वहाँ वह तिलसे होम करे और गायत्रीका जप करे'-

यत्र यत्र च सङ्कीर्णमात्मानं मन्यते द्विजः ।
तत्र तत्र तिलोमो गायत्र्या वाचनं तथा ॥

(याज्ञ० स्मृ०, प्राय० ३०६)

तिलका महत्व

'जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातःकाल तिलका दान करता है, तिलका स्पर्श करता है, तिलको खाता है, तिलसे स्नान करता है और तिलसे हवन करता है, वह सभी प्रकारके पापोंसे मुक्त हो जाता है'-

तिलान् ददाति यः प्रातस्तिलान् स्पृशति खादति ।
तिलस्नायी तिलाञ्जुह्वन् सर्वं तरति दुष्कृतम् ॥

(यमस्मृति)

तिलाः पुण्याः पवित्राश्च सर्वपापहराः स्मृताः ।
शुक्लाश्चैव तथा कृष्णा विष्णुगात्रसमुद्भवाः ॥

(स्मृतिकौस्तुभ)